International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान समय में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की आधुनिकता

डॉ. शिखा खरे

सहायक प्रोफेसर शिक्षा संस्थान बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी

इजतंबज

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य को प्राचीन समय से ही प्रभावित करती आयी है और मनुष्य ने शिक्षा के माध्यम से ही संस्कृति और समाजको विकसित किया है। शिक्षा भौगोलिक परिस्थिति, देश, संस्कृति, समाज और समय के अनुसार कमजोर होती जा रही है परंतु आज हमारी शिक्षा की व्यवस्था ऐसी हो गई है, जहां हम शिक्षा का मतलब किसी विद्यालय, कालेज या विश्वविद्यालय में अलग–अलग विषयों की दस, बीस या तीस पुस्तकोंको शिक्षकों के माध्यम सेपढ़ लेने को ही समझा जाता हैं। जिस किसी व्यक्ति ने इस सीमित पाठ्यक्रम में रहकर जितनी अधिक से अधिक किताबें पढ़ी हैऔर जितनी ऊंची से ऊंचीपरीक्षा पास की हैं वह हम सभी के अनुसार उतना ही अधिक विद्वान या शिक्षित माना जाता है।आजकल लोग यह विचार रखते है कि जो व्यक्ति अक्षरों के ज्ञान से परिचित नहीं है या एक से अधिक या कई एक भाषाओं को एक साथ पढ़ने–लिखने की योग्यता नहीं है तोउसे किसी भी प्रकार से शिक्षित कहा ही नहीं जा सकता है। किन्तु हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा ऐसी नहीं थी उस समयशिक्षक विद्यार्थियों को केवल एक प्रकार की शिक्षा नहीं देते थे बल्कि उन्हें आध्यात्मिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा और शारीरिक विकास की शिक्षा प्रदान कराते थे। ताकि उनके जीवन में आई किसी भी प्रकार की छोटी–मोटी समस्या का सामना कर सकते थे, लेकिन वर्तमान समय की शिक्षा समस्यों को हल करने में असमर्थ है। क्योंकि आज हमारी वर्तमान शिक्षा अंधेरी गुफा में अपना रास्ता भटक गई है।मूलतः हमें अपनी वर्तमान आधुनिक शिक्षा की दिशा में परिर्वतन लाना आवश्यक है, जिसे हम इस लेख के माध्यम से दर्शाने का प्रयास कर रहे हैं।

ज्ञमलूवतके रू.प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, गुरुकुल प्रणाली, वर्तमान शिक्षा प्रणाली।

प्रस्तावना

प्राचीन शिक्षा वास्तव में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली थी। हजारों विद्यार्थी अपने घर से दूर गुरुकुल में रहकर आवश्यक शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षक को आचार्य या गुरु कहा जाता था तथा विद्यार्थी को शिष्य, ब्रह्मचारी कहा जाता था। प्राचीन समय में कागज का इजाद नहीं हुआ था, इसलिए पुस्तकों से पढ़ाना असम्भव था। अतः उस समय शिक्षा मौखिक या व्यवहारिक तरीकेसे दी जाती थी।शिक्षकों द्वारा शिक्षा देने के लिए कोई शुल्क नहीं लेते थे। यह शिक्षा निःशुल्क थी। छात्र शिक्षकों द्वारा सीखते थे और शिक्षा मेंउनकी दैनिक गतिविधि, वाद–विवाद, विचार विमर्शसम्मिलित होता था। उस समय कीशिक्षा में मौखिक उच्चारण, आगमन व निगमन विधि, आत्मनिरीक्षण, कहानी–कहना, याद रखना, आलोचनात्मक विश्लेषण और व्यावहारिक ज्ञान आदि शिक्षण तकनीकों का उपयोग किया जाता था। शिक्षक आत्मनिर्भरता एवं व्यावहारिक जीवन की शिक्षा प्रदान करते थे। विद्यार्थी जो भी पढ़ते थे, उसे स्मरण शक्ति के बल पर जीवन भर के लिए सुरक्षित रख लेते थे। प्राचीनशिक्षा में शारीरिक श्रम का विशेष स्थान था। यहां अग्र पद्धति का प्रयोग किया जाता था, जिसमें उच्च कक्षा के विद्यार्थी निम्न कक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाते थे।इस शिक्षा से व्यक्ति की सभी शक्तियों का सतत विकास होता था। प्राचीन समय में आजकल जैसी शिक्षा व्यवस्था नहीं थी, जो परीक्षा समाप्त होते ही किताबों से नाता तोड़ लेती है और पढ़े हुए विषयों को कुछ ही महीनों में भुलादी जाती है। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित करती थी और अनुशासन, सच्चाई, विनम्रता, सम्मान और आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। प्राचीन भारतीय शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिक, साध्य एवं जीवन में सहायक है। इस प्रकारएनईपी 2020 ने न केवल प्राचीन भारत के गौरवशाली अतीत को मान्यता दी है,बल्कि हमारा ध्यान वर्तमान पाठ्यक्रम में प्राइमरी स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, मैत्रेयी, गार्गी आदि प्राचीन भारतीय विद्वानों के विचारों और कार्यों को शामिल करने की ओर भी आकर्षित किया गया है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा

भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में अनौपचारिक और औपचारिक शैक्षिक संस्थाओं का उल्लेख मिलता है।मंदिरों, आश्रमों और गुरुकुलों में औपचारिक शिक्षा दी जाती थी ये उच्च शिक्षा के स्थान थे।जबकि अनौपचारिक शिक्षा परिवार, पण्डित, पुरोहित और सन्यासी से प्राप्त होती थी। विभिन्न धर्मसूत्रों में बताया गया है कि मां ही बच्चे की सबसे अच्छी शिक्षिका होती है।कुछ विद्वानों ने पिता को अपने बच्चे का शिक्षक माना है।सामाजिक विकास के साथ, शिक्षण संस्थाएँ बनने लगीं।प्राचीन समय में दी जाने वाली शिक्षा पूरी तरह से व्यावहारिक थी।गुरुकुल में संयम और विधिविहित जीवन, अभावों से भरा हुआ, त्याग की भावना को जन्म देता था।

विद्यार्थियों को स्वावलम्बन की शिक्षा दी जाती थी,ताकि वह अपने आने वाले जीवन में कहीं भी और कभी भी अपने पैरों पर खड़ा हो

सकेऔर जिससे सही निर्णय लेने की क्षमता औरसमत्वबुद्धि का विकास स्वतः ही हो जाता था।जीवन के प्रथम भाग में पूरी तरह से ब्रह्मचर्य का पालन करके शरीर को फौलाद की तरह मजबूत बनाया जाता था तथा ब्रह्मचर्य चारित्रिक विकास में शक्ति मिलती है।(दुबे, डॉ एस. पृ. 4,5)

गुरुकुल प्रणाली

वैदिक युग में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी गुरु के आश्रम में रहकर ज्ञान प्राप्त किया जाता था। उपनयन संस्कार के बाद ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने गुरु के आश्रम में प्रवेश किया करते थे।जहाँ वे लगभग चौबीस वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करते थे। वैदिक काल में शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी अर्थात गुरु द्वारा कहे गए शब्द विद्यार्थियों द्वारा बार–बार दोहराया जाता था विद्यार्थी वैदिक शिक्षा केन्द्रों में तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, वेद आदि का अध्ययन किया करते थे। प्राचीन भारतीय समाज में गुरु को बहुत अधिक महत्वपूर्ण स्थान दियाजाता थावैदिक युग में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच सीधा संबंध होता था। शिक्षा लगभग निःशुल्क थी। शिक्षा प्रदान करना विद्वानों एवं शिक्षकों का पवित्र कर्तव्य माना जाता था।वैदिक युग में आज के युग की भॉती परीक्षा लेने और डिग्री देने की प्रथा नहीं थीछात्र शिक्षक के सीधे संपर्क में रहते थे तथाअध्ययन पूरा होने पर समावर्तन संस्कार होता था जहॉ विद्यार्थी से विद्वत शिक्षक मण्डली द्वारा उसके अध्ययन से संबंधित प्रश्न पूछे जाते थे इसके बाद में वह स्नातक कहलाते थे।(राघव, अर. पृ. 57)

वैदिक युग में महिलाओं को भी शिक्षा दी जाती थी। इसका प्रमाण गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा आदि महिला विदुषियों द्वारा वाद–विवाद में भाग लेना तथा विभिन्न ऋचाओं की रचना करना है। सूत्र युग के अंत तक, वैदिक साहित्य का अध्ययन कम हो गया और दर्शन, व्याकरण, धर्मशास्त्र, खगोल विद्या, महाकाव्य, पोत निर्माण कला, मूर्तिकला और अन्य विषयों में रुचि बढ़ी।इस युग के स्नातक शिल्पकारी में प्रवीण थे। इस काल में भी शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली

शिक्षा मानव जीवन में विशेष महत्त्व रखती है तथामानव को सभ्य और ज्ञानवान बनाने का साधन शिक्षा है, वर्तमान समय मेंशिक्षा के महत्व को समझते हुए शिक्षण कार्यों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है। भारत में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था विद्यालय, स्कूल या महाविद्यालय तक सीमित हो गयी है।जिसमें शिक्षक कक्षा में पहुंचकर पूर्वनिर्धारित पाठ्यक्रम पढ़ता हैशिक्षक पाठ्यक्रम को पूरा करना ही अपना धर्म समझते हैं और फिर विद्यार्थी क्या करते हैं अध्यापक को इससे कोई मतलब नहीं है जिसका परिणाम यह है कि शिक्षक नैतिक मूल्यों को अपने विद्यार्थियों में विकसित नहीं कर पाते हैं।कालेजों के लड़के अक्सर अपने शिक्षकों की हंसी उड़ाते हैं, उनके बारे में अपमानजनक बातें कहते हैं और कभी–कभी शिक्षकों मारते पीटते भी देखा गया हैआज लोगों में अधिक भ्रष्टाचार, गुण्डागर्दी, हिंसा और अपराधी प्रवृत्ति है। जिससे देख हमारी आँखें शर्म से झुक जाती हैं।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली गुरुकुलों पर आधारित थी, लेकिन वर्तमान भारत की शिक्षा प्रणाली औपनिवेशिक है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अद्यतन और संशोधित है, साथ ही यह नए–नए विषयों, ज्ञान–विज्ञान को भी शामिल करती है। मानव जीवन को सुविधाजनक, सुंदर और आसान बनाने का प्रत्यक्ष उदाहरण कंप्यूटर शिक्षा है। इस शिक्षा प्रणाली से देशभर में नये स्कूल, विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों की स्थापना हुई और यह आज भी जारी है। साक्षरता दर बढ़ने के साथ–साथ शिक्षा का प्रसार भी बढ़ा है। वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़ों से पता चलता है कि, वर्तमान में देश की साक्षरता दर 73.00 प्रतिशत है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि यह महिला साक्षरता पर विशेष जोर देता है आज महिला साक्षरता दर बढ़ी है, जिससे आज महिलाओं की स्थिति समाज में मजबूत हुई है। आज महिला साक्षरता कि दर 64.60 प्रतिशत है। (एनसीईआरटी, 2018)

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अच्छाइयों के साथ–साथ कमियॉ भी हैं, जो हमारे समाज और देश पर बुरा प्रभाव डाल रही हैं। जैसे, आजकल संयुक्त परिवारों को एकांकी परिवारों में विभाजित हो रहा है और एकांकी परिवार नैनो फेमिली में विभाजित होता जा रहा है।अब परिवारों में कहानियों और किस्सों से बच्चों को नैतिक शिक्षा देने वाले बड़े बुजुर्गों का महत्व कम होता जा रहा है। ज्ण्टण्कार्टून, इंटरनेट और सिनेमा ने दादी–नानी की कहानियों की जगह ले ली है। जहाँ से मानवीय मूल्यों का ज्ञान मिलना न मुमकिन हैविद्यालयों में बच्चों को चरित्र बनाने और सामाजिक सरोकार विकसित करने वाली शिक्षा की जगह व्यावसायिक शिक्षा ने ले ली है. इस शिक्षा के माध्यम से हम एक सामाजिक सरोकारों और मूल्यों से कटे हुए व्यक्ति का निर्माण करते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का एक बड़ा दोष यह है कि यह रोजगारोन्मुख नहीं है दूसरे शब्दों में कहा जाये तो इसमें कुशल लोगों की कमी है और स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय केवल डिग्री बॉटने वाली संस्थाएं बनकर रह गयी है। यह सच है कि किताबें पढ़ना इस युग में विभिन्न प्रकार के विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का सबसे आसान और सुविधाजनक तरीका बन गया है, लेकिन यह कल्पना करना बिलकुल सही नहीं है कि शिक्षा प्राप्त करने का यही एकमात्र तरीका है। अतः प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यही सबसे बड़ा अंतर है।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में सुधार और पुनर्गठन की पेशकश हैताकि इसे 21वीं सदी की शिक्षा के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के साथ सामंजस्य बिठाया जा सके, साथ ही प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक विरासत को संपन्नकिया जा

सके।राष्ट्रीय शिक्षा नीति बताती है किदुनिया भर के विकसित देशों की तुलना से यह बात स्पष्ट हो चुकी है।कि अपनी परंपराओं, भाषा और संस्कृति में शिक्षित होने से सामाजिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक प्रगति में लाभ ही हुआ है।यही कारण है कि शिक्षा नीति2020 में उन विषयों, क्षमताओं और कौशलों को रखा गया है जिससे सभी छात्रों में मौलिक औररचनात्मक सोच को विकसित किया जा सके। इसमें भारतीय ज्ञान एक मुख्य बिन्दु है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा कि ''भारत के वर्तमान ज्ञान में प्राचीन भारत और आधुनिक भारत से प्राप्त ज्ञान में इसका योगदान और इसकी सफलताओं और चुनौतियों के साथ–साथ स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण आदि सेभारत के भविष्य के लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।'' (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ. 24)
अब प्रश्न यह उठता है कि अपने विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति और परम्पराओं से परिचित कराने के लिए क्या किया जाना चाहिए?नई शिक्षा नीति से यह सपना निश्चित रूप से पूरा हो सकता है अगर इस ज्ञान क्षेत्र को स्कूलों की पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। इस लक्ष्य को पूरा करने का सबसे प्रभावी उपाय है इस भारतीय ज्ञान परंपरा को वर्तमान पाठ्यक्रम के साथ समन्वित किया जाए। इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञान के विषय और लक्ष्य हमें अपनी संस्कृति और परंपराओं के बारे में बहुत कुछ सीखने और समझने के मौके प्रदान करते हैं।इसके अलावा, छात्रों में भारतीय ज्ञान और उनके विभिन्न पहलुओं में रुचि पैदा करने के लिए फील्ड ट्रिप, वाद–विवाद, मिनी प्रोजेक्ट, वीडियो मेकिंग जैसे कई अन्य तरीके अपनाए जाने चाहिए।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के बारे में भ्रांतियाँ और उनका समाधान

कुछ लोगों का कहना है कि पुरानी शिक्षा प्रणाली में कमियां है प्राचीन भारतीय शिक्षा का क्षेत्र बहुत सीमित था औरविद्यार्थियों का दृष्टिकोण उस समय इतना व्यापक नहीं था जितना आज के विद्यार्थियों का है।हम यह मान सकते हैं कि प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य मुख्य रूप से धार्मिक था और अधिकांश छात्र पूजा, स्तुति और कुछ अनुष्ठानों के अलावा अन्य विषयों के बारे में शायद ही कुछ जानते होगे।लेकिन यहाँ हमें यह मानना चाहिए कि पढ़ाया गया साहित्य धार्मिक था, लेकिन उस समय धर्म का मतलब सिर्फ पूजा–पाठ नहीं था। लेकिन धर्म पूरे जीवन का प्रतिरूप था। (अग्निहोत्री पृ. 5) यह भी सत्य है कि उस समय कुल जनसंख्या के अनुपात में शिक्षण संस्थानों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम थी।उस समय की सामाजिक स्थिति एवं व्यवस्था आज से बिल्कुल भिन्न थी तथा उस समय का समाज मुख्यतः कृषि प्रधान था। और आज भी कृषि क्षेत्र में काम करने वालों को विज्ञान एवं साहित्य की शिक्षा सुगम नहीं है।और आज भी गाँवों में रहने वाले अधिकांश लोगों को वैज्ञानिक खेती का कोई ज्ञान नहीं है।तब उद्योग भी हाथों की कारीगरी से किए जाते थे और उनका लक्ष्य मुख्यतः किसानों की आवश्यकताओं की वस्तुओ को बनाना हुआ करता था और शहरों की संख्या बहुत कम थी और विदेशी व्यापार बहुत सीमित होता था। यही कारण था कि प्रत्येक बच्चे को उसके जीवन यापन की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा दी जाती थी। ऐसी स्थिति में पढ़ने का प्रचार कम रहा होगा अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त इक्का–दुक्का लोग ही नजर आते थे तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, परन्तु यह सोचना कि देश में धार्मिक गतिविधियों के अतिरिक्त किसी अन्य विषय की शिक्षा का प्रचार नहीं हुआ, यह अज्ञानता का प्रतीक है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के पक्ष और विपक्ष

शिक्षण और सीखना दशकों से आगे बढ़ रहा हैवर्तमान शिक्षा पद्धति शिक्षक–केन्द्रित और रटंत के बजाय पूर्णतः विद्यार्थी–केन्द्रित है।दुनिया के किसी भी कोने में रहने वाले लोगों तक शिक्षा की और अधिक पहुंच और उपलब्धता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा हरी है।यह एक अच्छा बदलाव है और विद्यार्थी इस बढ़ती प्रवृत्ति का पूरा लाभ उठाते हैं।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शैक्षिक पाठ्यक्रम छात्रों को जीवन में आने वाली किसी भी प्रकार की समस्या और चुनौती का सामना करने के लिए तैयार किया गया है। आज प्रौद्योगिकी और तकनिकी की प्रगति के कारण हर कोई ऑनलाइन और वर्चुअल प्लेटफॉर्म से सीख सकता है।इंटरनेट पर भारी मात्रा उपलब्ध जानकारी और सूचनाओं तक पहुँचने के लिए शिक्षक और विद्यार्थी विभिन्न वेबसाइटों, सोशल मीडिया और यूट्यूब चैनलों का उपयोग करते हैं।आज की शिक्षा का मुख्य लक्ष्य तकनीकी और सामाजिक रूप से जुड़ी दुनिया में वैश्विक कौशल विकसित करना है।
वर्तमान शिक्षा प्रणाली के फायदे और नुकसान एक सिक्के के दो पहलू की तरह हैं। वर्तमान शिक्षा की कुछ कमजोरियाँ इसका दूसरा पक्ष भी हैं।
नवीनतम डिजिटल शिक्षा प्रणाली का उपयोग करना महंगा है, लेकिन अगर यह मुफ्त होता तो यह शानदार अवसर है जब इसका उपयोग करने के लिए स्वयं के उपकरण और कनेक्शन सुविधाएं स्थापित करने की आवश्यकता होती है, तो यह महंगा हो जाता है।शिक्षा में नवीन चलन ने स्थानीय भाषाओं पर बुरा प्रभाव डाला है। स्कूलों, विश्वविद्यालयों और संस्थानों में अंग्रेजी सबसे आम विदेशी भाषा है।यहां तक कि टैक्नोलजी भी अंग्रेजी के आधार पर ही आती हैं इसलिए सीखने की प्रक्रिया में अंग्रेजी का उपयोग करना अनिवार्य हो जाता है।वर्तमान प्रौद्योगिकी–आधारित शिक्षा ने विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक संपर्क को बहुत प्रभावित किया हैजब शिक्षकों और साथियों के बीच बहुत कम संवाद होता है, वे ऊब महसूस करते हैं। हालाँकि वर्तमान शिक्षा पद्धतियों के पक्ष और विपक्ष दोनों के अपने–अपने तर्क हैं।

निष्कर्ष

बीते समय के साथ समय की मांग बढ़ गई है वर्तमान समय में प्रत्येक वस्तु का अपना महत्व है प्राचीन समय में हमारा देश उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा था किसी देश की उन्नति के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है प्राचीन काल में शिक्षा का प्रारंभ वैदिक काल से माना जाता है वैदिक काल में शिक्षा का प्रमुख स्रोत वेद हुआ करते थे बालक को प्रारंभिक शिक्षा वेदों की दी जाती थी परंतु वर्तमान समय में बदलते समय के साथ तथा बढ़ती हुई जरूरतों के हिसाब से बालक को वेदों की शिक्षा नहीं दी जाती है वर्तमान समय डिजिटल है जिसमें व्यक्ति को तकनीकी तथा मशीनीकरण की शिक्षा दी जाती है परंतु इस डिजिटल दौर का माध्यम वेद ही है हमारे वेदों में आधुनिक काल में होने वाले सभी परिवर्तनों को पहले ही लिखा जा चुका है परंतु व्यक्ति से अनभिज्ञ है प्राचीन काल की शिक्षा को आधार बनाकर वर्तमान की शिक्षा को संचालित कर सकते हैं परंतु वैदिक काल की तरह शिक्षा खुले में तथा मौखिक तरीके से देना कठिन है।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में ऋषियों के निजी गुरुकुलों की स्थापना हो सकना असंभव है। अब एक लंगोटी या धोती पहने मूँड मुड़ाये भोजन के लिए भिक्षावृत्ति को अंगीकार करने वाले विद्यार्थी की कल्पना करना भी हास्योत्पादक ही मानी जायेगी। अब शिक्षा की व्यवस्था को देश की सरकार ने अपने हाथों में ले लिया है और अन्य किसी के पास इतने साधन होने असंभव हैं कि वह इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था कर सके। इसलिए वर्तमान स्कूलों तथा कालेजों का सर्वथा उच्छेद हो सकना तो संभव नहीं पर उनका रूपांतर होना अत्यन्त आवश्यक है और उनमें प्राचीन शिक्षा पद्धति की उपयोगी बातों का समावेश करने से बहुत अधिक लाभ उठाया जा सकता है। इस तरह दोनों पहलुओं पर विचार करने से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि प्राचीन शिक्षा पद्धति तथा देशकाल की वर्तमान बदली हुई परिस्थिति में ठीक उसी तरह नहीं लागू की जा सकती है किन्तु उसमे कुछ परिवर्तन करके उससे लागू किया जाय तो हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति और लाभकारी हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्निहोत्री, आर. (2006). आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें और समाधान, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
2. दुबे. एस. शरतेन्दु (2007). प्राचीन भारत में शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स 11. यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद 2110021
3. राघव, अर. (1995). प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास, आत्माराम एण्ड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006
4. नायक, बी. के. (2012). हिस्ट्री हेरिटेज एण्ड डेवलपमेन्ट ऑफ इण्डियन एजुकेशन, नई दिल्ली, भारतः एक्सिस बुक्स प्रा. लि.
5. एनसीईआरटी (2018).भारतीय आधुनिक शिक्षा, प्रकाशन प्रभाग एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस श्री अरविंद मार्ग नयी दिल्ली 110016
6. प्दजमतदमज`वनतबमे
7. ीजजचेरूध्ध्जपउमेवपिदकपंण्पदकपंजपउमेण्बवउध्तमंकमतेइसवहध्उमजंअमतेमइसवबाबींपदध्मकनबंजपवद.तमवितउे.ूपजी.उमजंअमतेम.4676
8. ीजजचेरूध्ध्ूण्रंहतंदण्बवउध्मकपजवतपंसध्ंचदपइंज.दबत.जीम.पउचमतंजपअम.वि.पिदकपंद.ादवूसमकहम.जतंकपजपवद.पद.जीम.मकनबंजपवदे.लेजमउ.22412895णीजउस